आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 12-01-15

एक ही मनमनाभव के मंत्र से हम पतित आत्माओं को पावन बनने का ऐक्यूरेंट रास्ता बतलाने वाले, ज्ञान सागर, पतित-पावन बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पापों को भस्म करने का एक ही रास्ता है, अपने को यथार्थ रीति आत्मा समझ कर, बाप को भी बिंदी मिसल याद करो, वह ज्ञान का सागर है, बिजरुप है, पतित-पावन है....ऐसे समझ कर बाप को याद करने से ही तुम्हारी आत्मा पावन बन जायेगी.

आज भी कई आत्मा ये प्रश्न पुछती है कि फलानी आत्मा तो ज्ञान को इतना अच्छा समझाती हैं, मुरली भी बहुत अच्छा चलाती है, फिर भी उन्हें इतनी बीमारी या कष्ट क्यों झेलना पड़ता है? आज की मुरली में बाबा ने इसका उत्तर देते हुए स्पष्ट कहा, किसी को अच्छा ज्ञान सुनाना या अच्छी मुरली चलाने से तुम्हारे विकर्म विनाश नहीं होते हैं. लास्ट ६३ जन्मो के विकर्मो को विनाश करने का तरीका एक ही है - मनमनाभव, हे मनुष्य, अपने को आत्मा समझ मुझ परमात्मा को यथार्थ रीति याद करों, तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म हो जायेंगे.

अगर ब्राह्मण बनने के बाद भी, ज्ञान की समझ मिलने के बाद भी यथार्थ रीति योग से हमारे विकर्मो को विनाश नहीं किया तो अन्त में यही जन्म में बीमारी या अन्य देह के कष्टों से विकर्मों का खाता भरपाई करना पड़ेगा अथवा एक और जन्म इस कलियुग में ही लेकर कष्ट भोग ने होंगे लेकिन कैसे भी करके मुझे अपने विकर्मो का खाता चूक्तू करके ही यहाँ से मुक्ति मिलेगी. यह बात हर ब्राह्मण ज्ञानी आत्मा और अज्ञानी आत्मा दोनों के लिए ही लागू पड़ती हैं.

आज की मुरली से आत्मा और परमात्मा पर कहे गये महा-वाक्यों को यथार्थ रीति अपने को आत्मा समझ एक बाप कि याद में पढ़ेंगे. यथार्थ याद है मैं आत्मा हूँ और परमात्मा बाप मुझे ही यह ज्ञान दे रहे है ऐसी कोन्सियसनेस में रहकर, बाबा के महा-वाक्यों को पढ़ना.

- बाबा कहते है, तुम्हारी छोटी-सी आत्मा में ८४ जन्मो का पार्ट नुंधा हुआ है जो बजाती ही रहती है. देह-अभिमान में आने से ही तुम अपने स्वधर्म को भूल जाते हो. तुम्हारी आत्मा ही

तो पुकारती है हे परमपिता, हे पतित-पावन, हम आत्मायें अब पतित बन गये है, आकर हमें पावन बनाओ. अब बाप आकर तुम्हें आत्म-अभिमानी बनाते है और कहते है मामेकम याद करो.

- बाप तुम्हें समझाते है, बच्चे तुम ही पूज्य देवता थे. ८४ जन्म लेते-लेते तुम्हारी आत्मा पावन से पतित बन पड़ी है. यह सारा खेल है पतित से पावन, पावन से पतित बनने का. सारा ज्ञान बाप स्वयं आकर तुम्हें इशारे में समझाते है. यह तुम्हारा अंतिम जन्म हैं. सारा हिसाब-किताब चूक्तू कर अब तुम्हें घर जाना हैं.

- बाप कहते है तुम्हारी आत्मा ही ८४ जन्मो का पार्ट बजाती है. तो तुम्हारी आत्मा सबसे पावरफुल हुई ना. यह सारा खेल है आत्मा और परमात्मा का, जिसको तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते. यह सारा सृष्टि का चक्र है - ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का.

- बाप से तुमने प्रतिज्ञा की है - कोई भी देहधारी से दिल नहीं लगायेंगे. तुम्हारी आत्मा ही कहती है हम एक बाप को ही याद करेंगे. अपनी देह को भी याद नहीं करेंगे. बाप ही तुम्हें देह सहित सबका सन्यास कराते है. फिर औरों के देह में लगाव क्यों रखते हो. बाप तुम्हें कहते है - अब देही-अभिमानी बनो.

- बाप तुम्हें समझाते है हाथ कार डे दिल यार डे. जैसे आशिक माशूक धंधा आदि करते भी माशूक को याद करते रहते है वैसे ही तुम्हारी आत्मा की प्रीत भी परमात्मा से है तो उनको ही याद करती रहती हैं.

- बाबा कहते है अब बाप तुम्हें सच्ची याद सिखलाते है. चिंतन करो, मैं आत्मा छोटी-सी बिन्दु हूँ, बाबा भी इतनी छोटी-सी बिन्दु है, उसमें सारा ज्ञान भरा है. वही ज्ञान सागर, बिजरूप, पतित-पावन हैं. ऐसे चलते फिरते भी चिंतन में रहो. ऐसे ही याद में रहने से तुम पावन बन जायेंगे. कर्मातित बन जायेंगे और मेरे पास आ जायेंगे.

ॐ शांति.

Feedbacks/Queries/Suggestions to Atma Bhai on email a.brahmin.soul@gmail.com.